ग्रीष्मकालीन मूंग अपनायें अधिक लाभ पायें

- डा० सत्यजीत
- डा० बी. पी. राणा
- डा० उमेश कुमार शर्मा
- डा० शशि वशिष्ठ

कृषि विज्ञान केन्द्र, झज्जर

विस्तार शिक्षा निदेशालय

चौ० चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

हिसार (हरियाणा)

ग्रीष्मकालीन मूंग अपनायें अधिक लाभ पायें

ग्रीष्मकालीन में उगाई जाने वाली फसलों में मूंग का अपना एक विशेष स्थान है। शहाकारी भोजन में मूंग की दाल प्रोटीन का मुख्य स्त्रोत है। एक तरफ मूंग में पाई जाने वाली प्रोटीन पाचकता व पौष्टिकता के लिए लाभकारी है तो दूसरी ओर इस फसल के उगाने के अनेक लाभ हैं जैसे-भूमि की उर्वरा शक्ति में बढ़ोत्तरी, खाली समय में खेतों का सदुपयोग, पानी का सदुपयोग, फसल लागत में कमी व आमदनी में बढ़ोत्तरी। किसान भाई नवीनतम तकनीक व उत्रतशील किस्मों को अपनाकर ग्रीष्मकालीन मूंग से भरपूर पैदावार ले सकते हैं।

उन्नतशील किस्में

ग्रीष्मकालीन मूंग की काश्त के लिए एम. एच. - 421, पूसा बैशाखी व एस एम एल-668 किस्मों को ही चुनें। ये किस्में 65-70 दिनों में पककर तैयार हो जाती हैं तथा इनकी औसत पैदावर 3-4 क्विंटल प्रति एकड़ है। इन किस्मों की फलियां पकने पर चटकती नहीं हैं और 80-90 प्रतिशत फलियां एक साथ पकती हैं। पीले पत्ते वाले मोजैक वायरस रोग के प्रति ये अत्यधिक सहनशील पाई गई हैं।

भूमि व खेत की तैयारी

अच्छे जल निकास वाली दोमट से हल्की दोमट मिट्टी इस फसल के लिए उपयुक्त रहती है। भारी जमीन में भी इसकी सफल काश्त की जा सकती है। मूंग की फसल को अम्लीय या क्षारीय भूमि में नहीं उगाया जा सकता। गेहूं की फसल के बाद खाली हुए खेतों के अलावा, आलू, गन्ना व सरसों से खाली हुए खेतों में भी मूंग को सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है।

बिजाई का समय

ग्रीष्मकालीन मूंग की बिजाई का समय 15 मार्च से 10 अप्रैल तक उपयुक्त है। गेहूं-धान फसल चक्र वाले क्षेत्रों में गेहूं की कटाई के तुरंत बाद इस फसल को सफलतापूर्वक लिया जा सकता है। पछेती बिजाई करने पर फसल पर मानसून की बारिश से प्रतिकूल असर पड़ने की आशंका रहती है। मूंग की फसल सरसों की कटाई के बाद भी सफलतापूर्वक ली जा सकती है।

बीज मात्रा व बिजाई का तरीका

अच्छी पैदावार लेने के लिए एकड़ की बिजाई के लिए 10-12 किलोग्राम बीज का प्रयोग करें। बिजाई खूडों में 20-25 सै.मी. तथा पौधो में 7-10 सै.मी. फासले पर करें तथा ध्यान रहे

कि बिजाई 5 या 6 सै.मी. से अधिक गहराई पर न हो। एस. एम. एल. - 668 किस्म के लिए 8 किलोग्राम बीज एक एकड़ के लिए प्रर्याप्त रहता है।

बीजोपचार

मूंग के बीज को राइजोबियम+ पी.एस.बी. के टीके से उपचारित करना बहुत लाभदायक है। इसके लिए 50 ग्राम गुड़ को लगभग 250 मिलीलीटर पानी में घोल लें और छाया में पक्के फर्श पर बीज फैलाकर हाथों से मिला दें ताकि प्रत्येक बीज पर गुड़ घोल चिपक जाए। इसके बाद राइजोबियम+ पी.एस.बी. के टीके को खोलकर गुड़ लगे हुए बीज पर डालें तथा पौधों से सारे बीज में अच्छी तरह मिला दें। बीज को छाया में सुखाकर बिजाई करें।

खाद की मात्रा

दहलनी फसल होने के कारण इस फसल को नाइट्रोजन की थोड़ी मात्रा की जरूत होती है। फसल की अच्छी पैदावार के लिए 6-8 कि.ग्रा. शुद्ध फास्फोरस (100 कि. ग्रा. सिंगल सुपर फास्फेट) प्रति एकड़ के हिसाब से बिजाई के समय ही डाल दें। बिजाई के बाद अन्य उर्वरक डालने की जरूरत नहीं है।

सिंचाई

ग्रीष्मकालीन मूंग में सिर्फ दो सिंचाइयां ही पर्याप्त होती हैं। अधिक सिंचाई करने से पौधो की बढ़वार अत्यधिक हो जाती है और फलियां कम लगती हैं तथा फलियां एक साथ नहीं पकती। फसल में पहली सिंचाई बिजाई के 20-25 दिन बाद करें तथा दूसरी सिंचाई इसके 10-15 दिन के अंतर पर करनी चाहिए।

निराई-गोड़ाई

खरपतवारों की रोकथाम के लिए फसल की दो बार निराई-गोड़ाई करना अत्यंत आवश्यक है। पहली निराई 20-25 दिनों बाद तथा दूसरी निराई 30-40 दिनों बाद करके फसल को खरपतवार रहित रखना चाहिए। शाकनाशक दवाई के प्रयोग से भी खरपतवारों को काफी हद तक नियंत्रण किया जा सकता है। पैंडीमिथालिन (स्टॉम्प 30 ई.सी.) नामक शाकनाशक की 1.25 किलोग्राम क्रियाशील मात्रा 250 लीटर पानी में घोलकर बिजाई के तुरंत बाद प्रति एकड़ छिड़काव करें।

कीड़ो की रोकथाम

खरीफ फसल की तुलना में ग्रीष्मकालीन फसल में कीड़ों का प्रकोप कम होता है।

कभी-कभी ग्रीष्मकालीन मूंग में पत्ती छेदक बालों वाली सूंडी, हरा तेला व सफेद मक्खी का प्रकोप हो सकता है। बालों वाली सूंडी व पत्ती छेदक के नियंत्रण के लिए 250 मिलीलीटर मोनोक्रोटोफॉस (36 एस.एल.) या 500 मि.ली. क्विनलफॉस (25 ई.सी.) को 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें। हरा तेला व सफेद मक्खी की रोकथाम हेतु 400 मि.ली. मैलाथियान (50 ई.सी.) या 250 मि.ली. डाइमेथोएट (रोगोर) 30 ई.सी. या 350 मि.ली. ऑक्सीडैमटान मिथाइल (मैटासिस्टाक्स) 25 ई.सी. या 250 मिलीलीटर फार्मोथियान (एन्थियो) 25 ई.सी. कीटनाशकों में से किसी भी एक कीटनाशक को 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें।

बीमारियों की रोकथाम

ग्रीष्मकालीन मूंग में बीमारियों का प्रकोप भी बहुत कम होता है जड़-गलन तथा पीला मोजैक मूंग की प्रमुख बीमारियां हैं। जड़-गलन रोथाम के लिए 4 ग्राम थाईरम प्रति किलो बीज के हिसाब से बिजाई से पूर्व बीज उपचार करें। पीला मोजैक की रोकथाम के लिए सफेद मक्खी की रोकथाम करना अति आवश्यक है। सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु उपरोक्त बताए गए कीटनाशकों में से किसी एक कीटनाशक का 10-15 दिनों के अंतर पर दो या तीन बार छिड़काव करें। आरंभिक अवस्था में रोगी पौधे दिखाई देने पर उन रोगी पौधों को उखाड़कर नष्ट कर दें ताकि यह रोग आगे न फैलने पाए।

फसल की पकाई व कटाई

फसल पकने पर फलियों का रंग गहरा भूरा हो जाता है। जब फलियां 90 प्रतिशत पक जाएं तो उनको तुड़वा लेना चाहिए। फलियां तोड़ने के बाद फसल अवशेष को जुताई करके खेत में ही मिला देने पर यह हरी खाद का काम करता है जो कि खेत की उर्वरा शक्ति में सुधार करता है।

पैदावार बढ़ाने हेतु मुख्य सुझाव

1. बिजाई करते समय खेत में नमी उचित मात्रा में हो।
2. हमेशा उन्नत किस्मों का प्रयोग करें।
3. बीज का राईजोबियम+ पी.एस.बी. टीके से उपचार अवश्य करें।
4. खाद की सिफारिश की गई मात्रा ही डालें।
5. खरपतवारों की रोकथाम समय पर अवश्य करें।